RENDEZVOUS with KAILASH KHER

Influenced by the Sufi School of music, he is an iconic Pop-Rock Singer. Belting out hits like Allah ke Bandey, Deewani & Saiyan, he has the youth swaying to his tunes. This time Rail Darpan introduces Kailash Kher... Let's sway to Allah Ke Bandey!

Chief Editor

Q.1) You must have definitely had memorable occasions of travelling on WR Mumbai Suburban Network – your views sir ?

Ans : I have initially travelled a lot. It was not only fun and adventurous, but it was a matter of attraction too. I have very special memories. One night when I was left out at Mumbai Central station, they didn't allow me to enter the railway premises. I had a bike which I had brought from Delhi. The entire night I was roaming on bike here and there. I travelled by train last in the year 2001-2002, after that I never travelled by train. Every moment is a struggle for me. I used to travel between Andheri and Churchgate as my relatives work in Income-Tax department and I stay in Seven Bunglows, Andheri.

Q.2) Sir, any favourite train in which you have travelled in your childhood? Any pleasant anecdote?

Ans : There is one train which comes from Meerut to Mumbai named Frontier Mail. It was indeed one of my favourites. My new song is also based on train sound 'Daro Na Rang'.

Q.3) Indian Railways is a catalyst in unity in diversity. Passengers of all castes, creeds, religions, class etc. travel under one roof on rails. Your views Sir.

Ans : Aagar hum broader perspective se dekhe to train ke siva aur koi udhaharan nahi hai. I like the Indian Railways culture very much. Rail ki apni ek duniya hai. Apna ek organisation hai. Apni telephone lines hai. Apni ek system hai. What I like most in Indian Railways is that people respect their employees very much. Agar koi senior post se retired hota hai aur agar woh kisi senior se milta hai tab bhi woh pair chuke milta hai. Indian Railway is like one big family.

Q.4) During your shoots abroad you must have definitely travelled by rail networks abroad. How do you compare our punctuality with them Sir?

Ans : In punctuality we are in no way lesser than them. We are at par. As regards amenities, we cannot compare with developed countries as they have set up their infrastructure much earlier. We are still fighting for the basics.

Q.5) If not acting, which other profession would you have opted for Sir?

Ans : So many jobs. I would like to do like an export job, pandit job etc.

Q.6) Like all Mumbaikars, at some time you must have got stuck in a traffic jam. Sir ever felt the urge in such circumstances to dump your car and hop into a train?

Ans : Yes I did it. Once I was stuck in traffic near Napean Sea Road and wanted to give chakma to people, I left my car and took a taxi with tinted glasses. Hum pahonche Mumbai Central station, from there I took a train, itna mazaa aaya.

Q.7) Any songs of yours on rail based themes Sir? Your feelings when you sang rail based songs.

Ans : I have already sung a song on rail based theme on Door Darshan. It was in association with Rail Ministry. Recently I sang a rail based song 'Daro Na Rang'.

Q.8) Trespass ing, i.e. crossing of railway tracks on the Mumbai Suburban section causes serious concern at all levels despite Western Railway's various constant endeavours. Would you please convey a message to the public who are jeopardising their lives by crossing tracks?

Smile Awhile with Kailash Kher

★Kailash Kher interacting with the editorial team of 'Rail Darpan' Magazine

Ans : Self awareness would help a lot. We should educate people how to obey & respect laws. We people lack civic sense and basic common sense. Education would help a lot to eradicate this menace.

Q.9) An appeal from you to keep railway premises clean and hygienic.

Ans : I would like to suggest the same again here that education is a part of civic sense and it is attached to hygiene and cleanliness. Cleanliness is a personal thing and thats why you keep your home clean. Keep railway premises clean as you would keep your home clean.

Interviewed by:
Hormazd Mohta, PRO (Adm.), Churchgate
Ajay Solanki, CPRI, Churchgate
Photo by: Prabhat Mohite,
Asst. Photographer, Churchgate

संगीत के ज़रिये भक्ति रस की बौछार

पश्चिम रेलवे कला एवं सांस्कृतिक संगठन द्वारा संगीत के विभिन्न प्रकारों को बड़े बेहतरीन तरीके से पेश किया जाता है। होली और दीवाली जैसे प्रमुख त्यौहारों तथा वर्षा ऋतु इत्यादि के अवसरों पर आयोजित संगीत कार्यक्रमों में फिल्मी और गैर फिल्मी गीतों का रेल कलाकारों द्वारा शानदार प्रस्तुतिकरण तो किया ही जाता है, परंतु किसी विषय-विशेष पर संगीत की विभिन्न विधाओं को भी इस संगठन के कलाकार बखूबी प्रस्तुत करते हैं। गोडबोले सभागार में पिछले दिनों ऐसे ही एक गुणी कलाकार श्री विपिन मिश्रा द्वारा शंख और डमरू की सहायता से रुद्राष्टक बड़े ही आकर्षक तरीके से प्रस्तुत किया गया, जिसमें सम्मोहक मंत्रों के उच्चारण के साथ विभिन्न शंखों एवं डमरू की रोमांचक ध्वनि से सारा वातावरण निनादित हो उठा। मनुष्य के जीवन में भक्ति का बड़ा महत्त्व है। भक्ति का स्वरूप अध्यात्म से प्रभावित होता है। प्रेम और अध्यात्म में बड़ा ही सूक्ष्म अंतर है। स्वार्थरहित प्रेम की पराकाष्ठा ही आध्यात्मिक आनंद की प्राप्ति कराती है। भक्ति की परिसीमा जब अपने इष्ट के इतने निकट पहुँच जाती है, कि भक्त और भगवान के बीच सीधा आत्मिक संवाद स्थापित होता है, तो वह मनुष्य सर्वसामान्य मनुष्यों के बीच रहकर भी सामान्य नहीं होता है। ऐसे अभूतपूर्व प्रेम का आभास ही ईश्वर सान्निध्य को प्रवृत्त करता है। चाहे भाषा जो भी हो या माध्यम कोई भी हो, परंतु जब संगीत के माध्यम से ईश्वर स्तुति अथवा सत्य का आभास, संगीत में डूब के-झूम के-मगन हो के किया जाता है, तो चाहे उसका नाम भजन, कव्वाली या सूफी संगीत ही क्यों न हो, उसका भावार्थ, उसका आभास और उसका एहसास भक्त को चरम आनंद और बेपनाह सुकून दिलाता है।

आषाढ़ी एकादशी के अवसर पर 'जय घोष हरिनाद का' नामक भक्ति संगीत का कार्यक्रम सांस्कृतिक संगठन के कलाकारों द्वारा इतने भावपूर्ण तरीके से प्रस्तुत किया गया कि सारा वातावरण भगवान विट्ठल के जयघोष में आकंठ डूब गया। भक्ति और श्रद्धा मानव के जीवन में सशक्त आध्यात्मिकता की भूमिका निभाते हैं। ऋषियों और संतों की पुण्य भूमि हमारे भारत में मानव धर्म के पालन के साथ-साथ जन कल्याण संदेश की गंगा प्रवाहित होती है। संत कबीर, संत गोरा कुम्भार, संत नामदेव, सावता माली, तुकाराम, जना बाई, गुरू नानक इत्यादि संतों ने सेवा धर्म को ही पुण्य धर्म कहा। जीव दया, मातृ, पितृ एवं गुरू भक्ति, भातृ प्रेम और विश्व बंधुत्व की भावना इनके दोहों, भजनों और गीतों से झरनों की तरह प्रस्फुटित होती है। भक्ति भाव का ध्वज लिए झांझ, ढोल, मृदंग पर समानता का भाव लिए होठों पर ईश का नाम स्मरण किया जाता है, तो ईश्वर के सभी प्राणी समानता के रंग में एक ही प्रेम रंग में डूबे प्रतीत होते हैं। ईश्वर का यही प्रेम रूप मानो तो साकार है, न मानो तो निराकार है। यही सगुण है, यही निर्गुण है, यही संदेश भगवान विट्ठल के वारकरी प्रति वर्ष अपनी 'दिंडी' के दौरान देते हैं। सिर पर 'तुलसी' का पौधा, झांझ-मजीरें और ढोल-पखावज पर ईश स्मरण करते हुए जैसे सुध-बुध खोकर उस विट्ठल, उस पांडुरंग को प्रेम और करुणा भरी पुकार लगाते हैं। इस दिंडी में सारे रंग और भाव समान होकर केवल एक विट्ठलमय रंग में रंग जाते हैं। आषाढ़ी एकादशी पर भक्तों का यह हुजूम देखते ही बनता है। सम्पूर्ण महाराष्ट्र में आषाढ़ी और कार्तिकी विशेष उत्साह से मनाई जाती है।

एक महफिल, सूफियाना कलाम के नाम!

ईश्वर को स्मरण करने के कई तरीके हैं। ऐसी ही एक और इबादत का तरीका है, जिसे सूफी या तसब्बुफ कहा जाता है। दुनियादारी से दूर शुद्ध अंतःकरण से अल्लाह में डूब जाना ही इसका तात्पर्य है। आठवीं शताब्दी के आसपास सूफी प्रथा का जन्म हुआ और स्वयं को ईश्वर से सीधे जोड़ना इसका उद्देश्य था। सूफी यह शब्द अरबी शब्द 'सफा' से बना है, जिसका मतलब है शुद्धता। कुछ विद्वान इसका अर्थ बुद्धिमत्ता से भी लगाते है। सूफी संतों को इस्लाम प्रसार करने का श्रेय दिया जाता है। सूफी प्रथा मुस्लिम देशों के अतिरिक्त हिन्दुस्तान व अफ्रीका में भी लोकप्रिय हुई। पाकिस्तान का मुल्तान शहर सूफी संतों का शहर कहलाता है। सूफी भक्ति गीतों एवं कव्वालियों का फिल्मों में भी प्रभाव देखा जा सकता है। आज के दौर के संगीत प्रेमी सूफी गीतों को काफी पसंद कर रहे हैं। इसी को मद्दे नज़र रखते हुए पिछले दिनों पश्चिम रेलवे कला एवं सांस्कृतिक संगठन द्वारा पश्चिम रेलवे के चर्चगेट स्थित प्रधान कार्यालय के सभागार में 'एक महफिल 'सूफियाना कलाम' के नाम' का आयोजन किया गया, जिसमें संगठन के कलाकारों ने सूफी मान्यता से जुड़े विभिन्न गीतों की शानदार पेशकश की।

श्रीमती पूजा संजय पवार,
कार्यालय अधीक्षक, परिवहन विभाग, चर्चगेट